

भोज ध्यान

भोज ध्यान का शाब्दिक अर्थ समाधि के रूप में लिया जाता है। समाधि किसी आत्मा को परमात्मा में विलुप्त ही नहीं हो जाना अन्यथा किसी जीव का ईश्वर में मिल जाना भोज कहलाता है।

भोज ध्यान पंजरालि का भोज सूत्र से प्राचीन भारतीय ग्रन्थ है। इस लिए पंजरालि को ही भोज ध्यान का पूर्वक अन्यथा जन्म देता कहा जाता है। भोज सूत्र के निर्माण में पंजरालि ने अतीन्द्रिय बुद्धि का परिचय दिया है। इस लिए भोज ध्यान को पंजरालि ध्यान के नाम से पुकारते हैं।

भोज ध्यान में भोज सोचना के लिए तीन मार्ग बरलाने होते हैं। (1) भोज सूत्र (2) अतिन्द्रिय बुद्धि (3) भोज सूत्र। इन तीनों मार्गों में किसी को अपना घर चुनिके आगे बढ़ना ही चाहिए। सभी ही में जिल एक ही

बान की शुरुआत के लिए हृदय मानन की शुरुआत की आवश्यकता है। भोज या ध्यान के लिए आत्म ब्रह्म अलग ही आवश्यक है। भोज ध्यान में आत्म ब्रह्म को प्राप्त करने ही प्रती का अर्थ है। आत्म-दृष्टि

के द्वारा सत्य (Truth) को प्रतीकित करते हैं।
 जिनकी शुरुआत एवं परिवर्तन के सत्य के
 नाम रखने के लिए योग दर्शन में योग
 क्रिया को अपनाया गया है। योग क्रिया
 के लिए आठ साध्य व 8 भागों में है।
 (1) यम (2) निग्रम (3) आसन (4) प्राणायाम
 (5) प्रत्याहार (6) धारण (7) ध्यान (8) समाधि
 इसका नाम अष्टांग योग है।

अष्टांग योग

(1) यम - यम योग का पहला भाग है यह
 शरीर साध्य है यह पांच प्रकार का होता है
 (1) ब्रह्मचर्य (2) अस्तेय (3) अक्रोध (4) अहंकार (5) अमन्यता
 (6) उपद्रव ।

(2) निग्रम - इसके अन्तर्गत साधक का पालन होता है
 इसके भी पांच भेद हैं (1) शौच (2) संतोष
 (3) तप (4) स्वाध्याय (5) इन्द्रिय प्रतियोग
 (3) आसन - इसके भी शरीर साध्य भाग
 होता है आसन कई प्रकार के होते हैं। पद्मासन
 वीरभद्रासन, शीतलिन, गतासन
 इत्यादि । इन आसनों के द्वारा शरीर को
 एकत्रित शरीर का निर्माण सम्भव है।
 (4) प्राणायाम - प्राणायाम वह क्रिया है प्राणायाम
 पर नियंत्रण जोर दिया गया है इसके योग में

प्रमाणों को महत्वपूर्ण स्थान दे

(5) प्रस्तावित - प्रस्तावित को अपनी विरिद्धता को व्यक्त करने में करना इससे पहले पर्याप्त रूप से अपने मन में आगे से सोचना है।

(6) व्याख्या - अपने विचार को किसी विशेष अवस्था में केन्द्रित करना इस अवस्था में मन व्यक्त विचार किसी एक ही स्थान पर उभारना है जहाँ वे दूसरा विचार विचारणा में नहीं

(7) व्याकरण - यह भाग है कि वाक्य प्रयोग में इस अवस्था में सलोक प्रकृत होने लगी है व्याकरणों सुदृढ़ता-पहल रूप से समझना होता है

(8) समाप्ति - भाग (अथवा) ही यह स्थिति है इस पर उभार कर लक्षित अपनी संजाल में प्रकृत जाता है और लक्षित विचार का लक्षित संजाल ही होता है। आलावा परमात्मा के साथ मिलान। लक्षित के ही श्रम व्यक्त रूप में लीन होता है। महत्त्व जीवन को मानव्य रूप देना है ताकि न ही प्रकृत कर भाग ही सारी पाठा समाप्त हो गई जाती है।

इसका अर्थ है
व्यक्त आत्मा विभाजित